उन्होंने रंगों को दिया। रंगों की मधुरता एवं अंगों की उनापसी ससंगति एक साथ मिलक सौन्दर्य उत्पन्न करते हैं। आगस्टाइन ने सौन्दर्य के साथ उसकी विरोधी कुरूपता को भी स्पष्ट करने का एक महत्वपूर्ण कार्य किया अरस्तु ने कहा था कि कुरूपता का चित्रण कर देने से वह आनन्दप्रद वस्तु हो जाती है इनके अनुसार 'कॉमेड़ी' में हास्य उत्पन्न करने के लिए कुरूपता उपयोगी है। किन्तु आगस्टाइन ने कुरूपता को सौन्दर्य के समकक्ष स्थान दिया। चित्र में प्रकाश और छाया का एक साथ बराबर महत्व है यदि उसे उचित स्थान पर देखा जाए तब विश्व में सर्प, चीते, जहर आदि अपना औचित्य रखते है इस तरह सामंजस्य और सन्तुलन का अर्थ अधिक स्पष्ट होता है उनका कहना था कि कुरूपता को यदि उचित स्थान पर ~~देखा जाए तब विश्व में सर्प~~ प्रस्तुत किया जाए तो उससे सौन्दर्य आहत नहीं होता वरन् और अधिक बढ़ जाता है। इस तरह विरोध के कारण समरूपता अधिक सार्थक हो उठती है। अर्थात् कुरूप होगा ही नहीं तो सौन्दर्य का मूल्यांकन ही नहीं हो सकता। इस प्रकार कुरूपता को इन्होंने एक तुलनात्मक शब्द माना है जब रूप विकास की प्रक्रिया में कोई त्रुटि हो जाती है परिणामत: रूप अव्यवस्थित हो जाता है तो कुरूप का आविर्भाव होता है जितनी मात्रा में सौन्दर्य के गुण कम होते जाते है (लय, सन्तुलन, सामंजस्य, व क्रम आदि), वैसे ही कुरूपता आती जाती है।

Scanned with CamScanner

आध्यात्मिक सौन्दर्य की ओर अग्रसिद्ध हो सके। ऐसे सौन्दर्य के प्रति अनुराग यदि ज्यादा हो तो वह हानिकारक होता है क्योंकि वह परम सौन्दर्य की ओर ले जाने की अपेक्षा सांसारिक की ओर आकर्षित करता है अतः यह आवश्यक है कि उसके अनुसार सन्तुलन रखा जाए व उसके अनुसार कृतघ्न व्यक्ति ही अपने को सांसारिक सौन्दर्य तक सीमित रखेगा। बाहरी सौन्दर्य की चाह मे मानव को आत्म सौन्दर्य नही भूलना चाहिए।

धर्म सम्बन्ध कला के आरी अर्थ कुछ भी हो गूढ धार्मिक अर्थ आध्यात्मिक होते हैं इन्होने ईसाई चर्च के कला सम्बन्धी सिद्धान्तों के नियम निर्धारित किए —

1. कला का स्थान, कार्य और उद्देश्य ईसाई धर्म के आधार पर मापे जाए।

2. चर्च द्वारा कला का निर्माण व उपयोग प्रयोजित किया जाए (इसी आधार पर चर्च में दसवी शताब्दि तक बहस चली कि चर्च में मूर्ति हो या न हो मूर्ति पूजा का औचित्य क्या है।)

3. कला का उद्देश्य धर्म व धर्मग्रन्थ में आस्था लाना व बढ़ाना होना चाहिए। किसी भी कलाकार का कार्य नैतिक और धार्मिक आधारों पर जाँचा जाना चाहिए

4. कला पूजा को, आस्था को दृढ़ करने वाली होनी चाहिए।